B.A. HINDI HONOURSE PART – 1

PAPER – 2

"रामचरितमानस की प्रासंगिकता"

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni

<u>रामचरितमानस की प्रासंगिकता</u>

रामचरितमानस की रचना का मूल उद्देष्य लोकमंगल स्वीकारा गया है। लोकमंगल का विधान तभी हो सकता है जब समाज एंव परिवार में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो तथा उदात्त जीवन मूल्यों पर सबका ध्यान केंद्रित हो। रामचरितमानस में तुलसी की दृष्टि रामकथा के माध्यम से आदर्ष जीवन मूल्यों की स्थापना करने की ओर केंद्रित रही है। यही कारण है कि विविध प्रसंगों का उल्लेख है और जीवन के किसी पक्ष की उपेक्षा नहीं हो सकी है।

रामचरितमानस के माध्यम से जिस आदर्श और मर्यादा को स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास तुलसी ने किया है वह कल, आज और कल समान रूप से प्रासंगिक है। रामचरितमानस का कथ्य विषय जिन शैक्षणिक तथ्यों, समस्याओं एंव सत्यों का दर्शन कराता है, उसकी प्रासंगिकता कभी समाप्त नहीं हो सकती क्योंकि वे सत्य मानव जीवन के मूलभूत अनुभूत सत्य हैं।

भले ही रामचरितमानस की रचना वर्षो पूर्व तद्युगीन परिस्थतिओं एवं समस्याओं को घ्यान में रखकर की गई हो पर उनमें निहित षिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा की आज उनकी षिक्षाओं की आवष्यकता तत्कालीन युग की अपेक्षा अधिक है।

रामचरितमानस भारतीय जन मानस का जीवंत दस्तावेज है। अशक्त और निर्धन व्यक्ति भी ‘‘निर्बल के बल राम’ ’ कह कर शांति और सुख का श्वांस लेते हैं। आधुनिकता के उथल-पुथल परिस्थिति में रामचरितमानस हमें एक दूसरे से लड़ने और परस्पर ईष्र्या करने की षिक्षा नहीं देता वरन् यह सहयोग और समन्वय सिखता है। रामचरितमानस का यह स्वर “ सियाराम मय सब जग जानी ”सबों से

मिलजुल कर मित्रवत् रहने को प्रेरित करता है । आज भी रामचरितमानस के धार्मिक उपदेश व्यक्ति को सन्मार्ग पर लाकर श्रेष्ठ बनाने में सहायक है। अछूतोद्धार, स्त्री- शिक्षा, लोकतंत्रात्मक भावनायें, प्रत्येक जाति और वर्ण की मर्यादा की शिक्षा से ओतप्रोत रामचरितमानस की प्रासंगिकता आज भी यथावत् है।

वर्तमान निम्न स्तर की राजनीति से आमजन हतप्रभ एवं निराश है। शासक वर्ग अपने कर्तव्य की बलि चढ़ाकर स्वार्थ सिद्धि में आकंठ लिप्त हैं ऐसे में रामचरितमानस की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। मानस यह सीख देता है कि साम, दाम, दंड, भेद आदि नीतियों में निपुण होते हुए राजा को आदर्श और सच्चरित्र भी होना चाहिए। रामचरितमानस में स्पष्ट उल्लेख है -

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
से नृप अबस नरक अधिकारी।।"

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi
APSM College, Barauni